

June 29, 2024
Saturday

Date :
P. No. : 01

पाठ :- 1

आत्मपरिचय

(हरिवंशराय बच्चन)

जीवनपरिचय :-

कविवर हरिवंशराय बच्चन का जन्म 27 नवम्बर सन् 1907 को इलाहाबाद में हुआ था। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अंग्रेजी विषय में एम. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की तथा 1942-1952 ई. तक यहीं प्राध्यापक रहे, उन्होंने कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय इंग्लैंड से पी. एच. डी. की उपाधी प्राप्त की।

1976 में उन्हें पद्मभूषण से अलंकृत किया गया। "दी चट्टान" नामक रचना पर उन्हें साहित्य अकादमी में भी पुरस्कृत किया। सन् 2003 में उनका निधन हो गया।

प्रमुख रचनाएँ :-

काव्य संग्रह - मधुशाला (1935), मधुबाला (1938), मधुकलश (1938), निशा निमंत्रण, एकांत संगीत, नये पुराने झरोके, टूटी-फूटी कड़ियाँ, आरती और अंगारे।

आत्मकथा - क्या भूलूँ क्या याद करूँ, नीड़ का निमग्न फिर, बसने से दूर, दहलार से सौपान तक।

अनुवाद - हेमलैट, जनगीता, मैकबेथ।

डायरी - प्रवास की डायरी, उनका समस्त साहित्य बच्चन ग्रंथाली के नाम से कई खंडों में प्रकाशित किया गया है।

काव्य-शैली ⇒

हरिवंश-राय बच्चन ने अपने साहित्य को प्रचार का माध्यम नहीं बनाया उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से अतिसाधारण विषय वस्तु को भी बहुत महत्व दिया और शायद इसी कारण जन भावनाओं को स्पर्श कर राष्ट्रीय जन कवि का चरित्र जीवंत कर सके।

भाषा-शैली ⇒

हरिवंशराय बच्चन लाक्षणिक वक्तुता के साथ-साथ सीधी-साधी जीवंत भाषा और सहज अनुभूति की ईमानदार अभिव्यक्ति की कविता के रूप में प्रकट कर दिया उनकी इसी शैली में उनके हिंदी काव्य संसार में विलक्षण और लोक-प्रिय बना दिया।

साहित्य में स्थान ⇒

हिंदी साहित्य के आधुनिक काल में हात्मावाद के प्रवर्तक के रूप में आपका नाम युगी-युगी तक हमेशा स्मरणीय रहेगा।

प्रश्न: 1 कविता एक ओर जग-जीवन का भार लिए व्युत्पन्न की बात करती है और दूसरी ओर "मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ" - विपरीत से लगाने इन कथनों का क्या अर्थ है?

उत्तर: 1 कवि के अनुसार प्रत्येक जीव-जंतु और प्राणी का संसार से स्वर्ण-मीठा संबंध रहता है।

उसका - संसार और समाज से अलग रहना संभव नहीं है। इसके लिए चाहे उस संसार से व्यांग बाण और कष्ट मिले, किंतु दुनिया से कटकर वह किसी भी कीमत पर नहीं रह पाता। इसलिए कविता में जगजीवन का भार लिए घुमने की बात कही गयी है।

दूसरी ओर कवि लगातार दुनिया से अपने दुविधापूर्ण और द्वंदपूर्ण संबंधों का रहस्य उद्घाटित करता है। वह अपने आप को मस्त-मौना, मग्न और संसार से अलग प्राणी मानता है। वह मानता है कि संसार में उसका अस्तित्व अलग ही है। इसलिए वह कभी-भी जग का ध्यान नहीं करने के विषय में कहता है।

प्रश्न: 2 जहाँ पर दाना रहते हैं, वहीं नादान भी होते हैं -
कवि ने ऐसा क्यों कहा होगा?

उत्तर: 2 नादान यानी मूर्ख व्यक्ति सांसारिक माया जगत में उलझ जाता है। मनुष्य इस माया जगत को निरर्थक मानते हुए भी इसी के चक्कर में फँसा रहता है। संसार असत्य है। मनुष्य इस सत्य मानने की नादानी कर बैठता है और मोक्ष के लक्ष को भूलकर संगत-वृत्ति में पड़ जाता है। इसके विपरीत कुछ ज्ञानी लोग भी समाज में रहते हैं, जो मोक्ष के लक्ष को नहीं भूलते अर्थात् संसार में हर तरह के लोभ रहते हैं।

प्रश्न: 3 मैं और और जग और जहाँ का नाता - पंक्ति
मैं और शब्द की विशेषता बताए।

उत्तर: 3 यहाँ और शब्द का तीन बार प्रयोग हुआ है।
अतः यह यमक अलंकार है, पहले और मैं कवि
स्वयं को आम व्यक्ति से अलग बताता है वह
आम आदमी की तरह भौतिक चीजों के संग्रह के
चक्कर में नहीं पड़ता दूसरे और के प्रयोग में
संसार की विशेषता को बताया गया है संसार
में आम व्यक्ति सांसारिक सुख-सुविधाओं को
अंतिम लक्ष्य मानता है। यह प्रकृति कवि की विचार-
धारा से अलग है। तीसरे और का प्रयोग
संसार और कवि में किसी तरह का संबंध नहीं
दर्शाने के लिए किया गया है।

प्रश्न: 4 शीतल वाणी मैं अग - के होने का क्या
अभिप्राय है ?

उत्तर: 4 कवि ने यहाँ विरोधाभास अलंकार का प्रयोग
किया है। कवि की वाणी यद्यपि शीतल है,
परंतु उसके मन में विद्रोह व असंतोष का भाव
प्रबल है। वह समाज की व्यवस्था से संतुष्ट
नहीं है वह प्रेम रहित संसार को अस्वीकार
करता है। अतः अपनी वाणी के माध्यम से
अपनी असंतुष्टि को व्यक्त करता है, वह अपने
कवित्त धर्म की जमानदारी से निभाने हुए लोगों
को जागरत कर रहा है।

प्रश्न: 5 बच्चे किस बात की आशा में नीड़ीं स झाँक रहे होंगे ?

उत्तर: 5 बच्चे चिड़ियों के पंखों की चंचलता देखने के लिए नीड़ीं स झाँक रहे होंगे।

प्रश्न: 6 दिन जल्दी - जल्दी ढलता है - की आवृत्ति स कविता की किस विशेषता का पता चलता है ?

उत्तर: 6 दिन जल्दी - जल्दी ढलता है की आवृत्ति स यह प्रकट होता है, कि लक्ष की ओर बढ़ते हुए मनुष्य की समय बीतने का पता नहीं चलता। अधिक लक्ष तक पहुँचने के लिए आतुर होता है। इस पंक्ति की आवृत्ति समय के निरंतर चलायमान प्रवृत्ति की ओर बतानी है। समय किसी की प्रतिष्ठा नहीं करता। अतः समय के साथ स्वयं समायोजित करना प्राणियों के लिए आवश्यक है।

W
पा 7/124